● **सुनो, समझो और लिखो :**

१३. नई राह की ओर

इस कहानी के माध्यम से यह संदेश दिया गया है कि आने वाले संकटों से बेझिझक लड़ना चाहिए। अपने जीवन की नई राह की निरंतर खोज करनी चाहिए।

✻ चित्रों में दिए गए संवादों को पढ़ो तथा समझो।

एक दार्शनिक अपने एक शिष्य के साथ कहीं से गुजर रहे थे। चलते-चलते वे एक खेत के पास पहुँचे। खेत अच्छी जगह स्थित था लेकिन उसकी हालत देखकर लगता था मानो उसका मालिक उसपर जरा भी ध्यान नहीं देता है।

खैर, दोनों को प्यास लगी थी सो वे खेत के बीचोबीच बने एक टूटे-फूटे घर के सामने पहुँचे। उन्होंने दरवाजा खटखटाया।

अंदर से एक आदमी निकला, उसके साथ उसकी पत्नी और दो बच्चे भी थे। सभी फटे-पुराने कपड़े पहने हुए थे।

"श्रीमान, क्या हमें पानी मिल सकता है? बड़ी प्यास लगी है!" जरूर!, आदमी उन्हें पानी का लोटा थमाते हुए बोला।

"मैं देख रहा हूँ कि आपका खेत इतना बड़ा है पर इसमें कोई फसल नहीं बोई गई है, न ही यहाँ फलों के वृक्ष दिखाई दे रहे हैं...तो आखिर आप लोगों का गुजारा कैसे चलता है?" दार्शनिक ने प्रश्न किया।

❑ विद्यार्थियों से चित्रों के आधार पर प्रश्न पूछें। वाक्य बनाने की प्रक्रिया एवं रचना के आधार पर वाक्यों के प्रकार (१. विधानार्थक, २. निषेधात्मक, ३. आज्ञार्थक, ४. प्रश्नार्थक, ५. संकेतवाचक, ६. संदेहार्थक, ७. इच्छार्थक तथा ८. विस्मयादि बोधक वाक्य) उदाहरणसहित समझाएँ। कहानी से इस प्रकार के वाक्य ढूँढ़कर लिखवाएँ।

खोजबीन

भारत के विभिन्न राज्यों में पाए जाने वाले प्राणियों की चित्र सहित सूची बनाओ ।

"जी, हमारे पास एक भैंस है, वह काफी दूध देती है । उसे पास के गाँव में बेच कर कुछ पैसे मिल जाते हैं और बचे हुए दूध का सेवन करके हमारा गुजारा चल जाता है," आदमी ने समझाया।

दार्शनिक और शिष्य आगे बढ़ने को हुए तभी आदमी बोला, " शाम काफी हो गई है, आप लोग चाहे तो आज रात यहीं रुक जाएँ!"

दोनों रुकने को तैयार हो गए।

आधी रात के करीब जब सभी गहरी नींद में सो रहे थे तभी दार्शनिक ने शिष्य को उठाया और बोले, "चलो, हमें अभी यहाँ से चलना है । चलने से पहले हम उस आदमी की भैंस को लेकर जाएँगे ।'' ''लेकिन क्यों गुरुदेव ?'' गुरुदेव बोले, ''उस आदमी की भलाई के लिए उसे कार्यरत करने के लिए ।'' शिष्य को अपने गुरु की बात पर यकीन नहीं हो रहा था पर वह उनकी बात काट भी नहीं सकता था। दोनों भैंस को लेकर रातों-रात गायब हो गए!

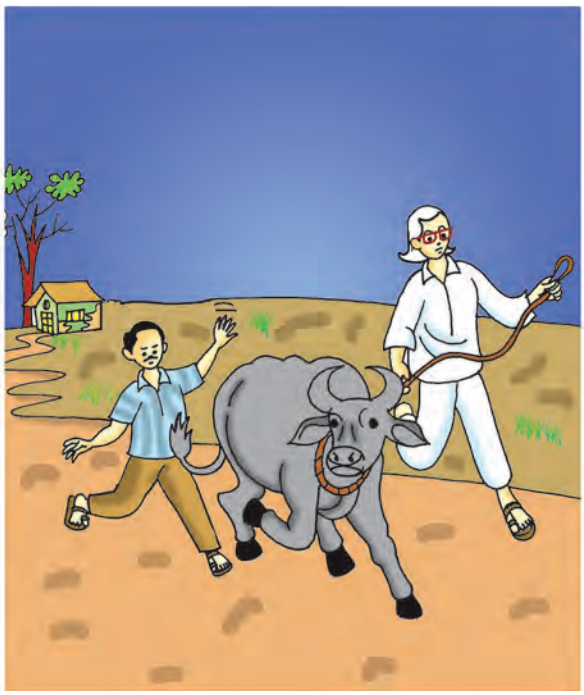

यह घटना शिष्य के जेहन में बैठ गई । करीब १० साल बाद जब वह एक सफल आदमी बन गया उसने सोचा क्यों न अपनी गलती का पश्चाताप करने के लिए एक बार फिर उसी आदमी से मिला जाए । उसकी

आर्थिक मदद की जाए। अपनी चमचमाती कार से वह उस खेत के सामने पहुँचा।

शिष्य को अपनी आँखों पर विश्वास नहीं हो रहा था । वह उजाड़ खेत अब फलों के बगीचे में बदल चुका था। टूटे-फूटे घर की जगह एक शानदार बंगला खड़ा था । जहाँ अकेली भैंस बँधी रहती थी वहाँ अच्छी नस्ल की कई गायें और भैंसें अपना चारा चर रही थीं।

शिष्य ने सोचा कि शायद भैंस के न रहने के बाद वह परिवार सब कुछ बेच-बाच कर कहीं चला गया होगा। वहाँ से वापस लौटने के लिए वह अपनी कार स्टार्ट करने लगा कि तभी उसे वही दस साल पहले

❑ कहानी का आदर्श वाचन करें । उचित आरोह-अवरोह के साथ वाचन कराएँ । प्रश्नोत्तर एवं चर्चा के माध्यम से पाठ का आशय समझाएँ । विद्यार्थियों से मौन वाचन कराएँ । कहानी को नाट्यीकरण के रूप में प्रस्तुत करने के लिए मार्गदर्शन करें । कठिन शब्दों के अर्थ समझाएँ ।

अध्ययन कौशल

वाहन नियंत्रण कक्ष द्‌वारा निर्धारित नियम-पालन हेतु सूचना फलक बनाओ और विद्‌यालय में लगाओ ।

वाला आदमी दिखाई दिया।

" शायद आप मुझे पहचान नहीं पाए, सालों पहले मैं आपसे मिला था," शिष्य उस आदमी की तरफ बढ़ते हुए बोला।

"नहीं-नहीं, ऐसा नहीं है । मुझे अच्छी तरह याद है, आप और आपके गुरु यहाँ आए थे । कैसे भूल सकता हूँ उस दिन को ! उस दिन ने तो मेरा जीवन ही बदल कर रख दिया। आप लोग तो बिना बताए चले गए, पर उसी दिन न जाने कैसे हमारी भैंस भी कहीं चली गई । कुछ दिन तो समझ ही नहीं आया कि क्या करें? पर जीने के लिए कुछ तो करना ही था, सो हाथ पर हाथ रखकर बैठे रहने के बदले यहाँ-वहाँ छोटे-बड़े काम करके उससे कुछ रुपये कमाना शुरू किया । जमा रुपयों से खेत में बोआई कर दी । सौभाग्य से फसल की अच्छी पैदावार हुई । फसल बेचने पर जो रुपये मिले उससे फलों के बगीचे लगवा दिए । यह काम अच्छा चल पड़ा और इस समय मैं आस-पास के हज़ार गाँवों में फलों का सबसे बड़ा व्यापारी हूँ । सचमुच, ये सब कुछ न हुआ होता अगर उस दिन हमारी भैंस चली न जाती ।''

"लेकिन यही काम तो आप पहले भी कर सकते थे," शिष्य ने आश्चर्य से पूछा।

आदमी बोला, " बिलकुल कर सकता था । पर तब जिंदगी बिना किसी मेहनत के आराम से चल रही थी । कभी लगा ही नहीं कि मेरे अंदर इतना सब कुछ करने की क्षमता है । मैंने कोशिश ही नहीं की पर जब भैंस कहीं चली गई तब हाथ-पाँव मारने पड़े । मुझ जैसा गरीब-बेहाल इनसान तभी आज इस मुकाम तक पहुँच पाया।"

आज शिष्य अपने गुरु के उस निर्देश का असली मतलब समझ चुका था और बिना किसी पश्चाताप के वापस लौट पा रहा था।

मैंने समझा

शब्द वाटिका

नए शब्द

दार्शनिक = तत्वज्ञानी

जेहन = बुद्‌धि

नस्ल = वंश

बोवाई = बीज बोने का काम

मुहावरे

हाथ पर हाथ रखकर बैठे रहना = कोई काम न करना

हाथ-पाँव मारना = प्रयत्न करना

जरा सोचो तो ... चर्चा करो ।

कहानी के शिष्य की जगह तुम होते तो ...

स्वयं अध्ययन

'भैंस' पर आधारित मुहावरे एवं कहावतें पढ़ो और संकलित करो ।

सुनो तो जरा

डोरेमॉन की कोई एक कहानी सुनो और सुनाओ ।

बताओ तो सही

'अक्ल बड़ी या भैंस' इसे स्पष्ट करते हुए कोई घटना बताओ ।

वाचन जगत से

मीरा के पद पढ़ो और उसका अनुलेखन करो ।

मेरी कलम से

''हेलन केलर'' के बारे में संक्षेप में जानकारी लिखो ।

✻ सही पर्याय चुनकर वाक्य फिर से लिखो ।

१. तो आखिर आप लोगों का ..... कैसे चलता है ?
[काम, गुजारा, परिवार, खाना-पीना]

२. यह घटना शिष्य के ..... में बैठ गई ।
[जेहन, अंतरात्मा, हृदय, मन]

३. शिष्य को अपनी आँखों पर ..... नहीं हो रहा था।
[अविश्वास, विश्वास, यकीन, भरोसा]

४. उससे कुछ पैसे जमा हुए तो खेत में ..... कर दी ।
[कटाई, औसाई, बोआई, निगरानी]

सदैव ध्यान में रखो

समस्या ही समाधान का उद्‌गम है ।

विचार मंथन

।। हमें पहुँचना उस मंजिल तक जिसके आगे राह नहीं ।।

भाषा की ओर
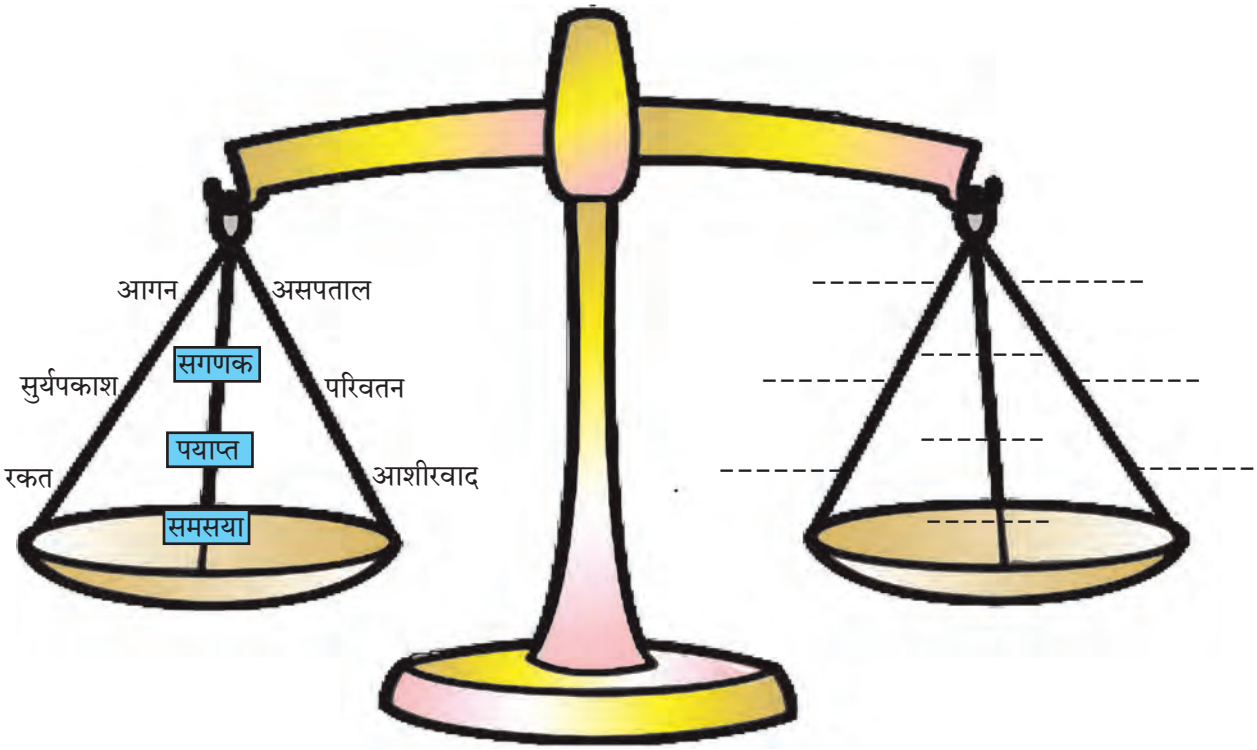
अशुद्‌ध शब्दों को शुद्‌ध करके उनका वाक्यों में प्रयोग करके लिखो ।